गाँधी अध्ययनपीठ

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

एम० ए० (गाँधी विचार)

पाठ्यक्रम विवरण

गाँधी अध्ययनपीठ

पाठ्यक्रम शीर्षक :

इस पाठ्यक्रम का शीर्षक एम0 ए0 (गाँधी विचार) है।

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य गाँधी विचारधारा के विभिन्न पक्षों यथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शिक्षा, उद्योग, श्रम, ग्रामीण उत्थान आदि के बारे में छात्रों को सैद्धान्तिक ज्ञान कराना, गाँधी विचारधारा की वर्तमान सन्दर्भ में सार्थकता एवम् प्रासंगिकता का बोध कराना, एवं गाँधी विचारधारा को जीवन में आत्मसात् करने एवं उसके प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न विधाओं के बारे में दक्ष बनाना है।

अवधि :

इस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष होगी।

प्रवेश स्थान :

इस पाठ्यक्रम में कुल 20 स्थान निर्धारित हैं।

प्रवेश अर्हता :

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 45 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक उपाधि प्राप्त अभ्यर्थी प्रवेश हेतु अर्ह होगा।

प्रश्न पत्र विवरण

एम0 ए0 (गाँधी विचार) प्रथम वर्ष

1. गाँधी दर्शन
2. गाँधी जी का राजनैतिक चिंतन
3. सामाजिक परिवर्तन के गाँधीवादी आयाम
4. गाँधी जी का सामाजिक चिंतन
5. परवर्ती गाँधीवादी चिंतन

एम0 ए0 (गाँधी विचार) द्वितीय प्रश्न पत्र

1. गाँधी जी का आर्थिक चिंतन
2. गाँधी जी का शैक्षणिक चिंतन
3. गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम एवं समाज कार्य
4. सामुदायिक संगठन एवं सामाजिक क्रिया
5. शोध निबन्ध अथवा अहिंसा एवं शान्ति दर्शन

प्रथम प्रश्न–पत्र

(गाँधी दर्शन)

युनिट–1

* *   भारतीय दर्शन एवम् पाश्चात्य विचारधारा की पृष्टिभूमि में गाँधी चिन्तन का विकास
* **   गाँधीवादी तत्व मीमांसा–मनुष्य, जगत एवम् ईश्वर, ईश्वर एवम् सत्य

युनिट–2

* *   गाँधीवादी आचार शास्त्र :– साध्य एवम् साधन उपयोगितावाद, सर्वोदय, गाँधीवादी नैतिक आदर्श
* **   गाँधीवादी मूल्य सिद्धान्त–नैतिक सद्गुण, एकादश व्रत

युनिट–3

* *   महात्मा गाँधी की प्राकृतिक चिकित्सा एवम् शाकाहार सम्बन्धी दर्शन
* **   महात्मा गाँधी की धर्म सम्बन्धी अवधारणा, नैतिक धर्म, सनातन हिन्दू के रूप में गांधी, सर्वधर्म समभाव, मानवतावाद, धर्म एवम् समाज।

युनिट–4

* *   महात्मा गाँधी का अहिंसा दर्शन अहिंसा दर्शन के विकास में गाँधी का योगदान
* **   गाँधी एवम् गीता, गाँधी जी के विचार में गीता की प्रासंगिकता
* *** समकालीन सन्दर्भ में गाँधी चिन्तन की प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. महात्मा गाँधी का दर्शन– डॉ0 धीरेन्द्र मोहन दत्त (अनु0 डॉ0 रामजी सिंह)
2. गाँधी का दर्शन – डॉ0 रामजी सिंह, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी
3. गाँधी का दर्शन – डॉ0 संगम लाल पाण्डेय
4. गाँधी विचार दोहन – श्री किशोर लाल मश्रुवाला–सस्ता साहित्य मंडल
5. सर्वोदय तत्व दर्शन – डॉ0 गोपीनाथ धवन
6. गाँधी का नीति–दर्शन 7 डॉ0 वेद प्रकाश वर्मा
7. Gandhi Ethics - M. K. Gandhi.
8. Autobiography - M. K. Gandhi.

द्वितीय प्रश्न–पत्र
(गाँधी जी का राजनैतिक चिन्तन)

युनिट–1

* गाँधी जी का राजनैतिक चिन्तन : उत्पत्ति एवम् आधार पाश्चात्य–रस्किन, टालस्टॉय एवं थोरो, भारतीय–गीता एवं गोपाल कृष्ण गोखले

** महात्मा गाँधी के अनुसार राजनीति का अर्थ, राजनीति के नैतिक आधार

युनिट–2

* राजनैतिक आदर्श–स्वराज्य या राज्य विहीन समाज, पाश्चात्य का अराजकतावाद, मार्क्सवाद

** राज्य शक्ति का सिद्धान्त–अहिंसक विकेन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था, ग्रामस्वराज्य का दृष्टिकोण

*** वर्तमान जनतांत्रिक व्यवस्था में दलीय कार्य प्रणाली, दलीय प्रणाली का समालोचनात्मक अध्ययन

युनिट–3

* राज्य के सामाजिक आर्थिक कार्य–अधिकार एवम् कर्त्तव्य

** राज्य की नागरिक एवम् सैन्य शक्ति के मध्य प्रतियोगी संघर्ष, इसका गाँधीवादी समाधान

*** राष्ट्रवाद एवं अन्तर्राष्ट्रवाद की अवधारणा

युनिट–4

* अहिंसक राज्य की विदेशी नीति–निःशस्त्रीकरण एवम् नागरिक सुरक्षा, राज्य की परमाणु नीति

** विश्वशान्ति एवम् विश्व सरकार

*** भारतीय संविधान पर गाँधी जी का प्रभाव

**** गाँधी विचार के सन्दर्भ में समाजवाद एवम् साम्यवाद का तुलनात्मक अध्ययन

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सर्वोदय तत्व दर्शन– डॉ0 गोपीनाथ धवन, सस्ता साहित्य मंडल
2. राज्यव्यवस्था : सर्वोदय की दृष्टि से– भगवान दास केला
3. समाजवाद से सर्वोदय– जय प्रकाश नारायण
4. लोकनीति – आचार्य बिनोवा भावे, सर्व सेवा संघ प्रकाशन
5. स्वराज्य शास्त्र–आचार्य बिनोवा भावे, सर्व सेवा संघ प्रकाशन
6. Political Thought of Mahatma Gandhi- Prof. V.D. Pradhan
7. Social and Political Ideas of Mahatma Gandhi-Alexander, Holece.
8. Non-Violence and Politics- V. V. Rama Murty.

तृतीय प्रश्न–पत्र

(सामाजिक परिवर्तन के गाँधीवादी आयाम)

युनिट–1

* महात्मा गाँधी के अनुसार मानव समाज में हिंसा का आधार
** सामाजिक परिवर्तन एवं गांधी जी की सत्याग्रह पद्धति, सत्याग्रह की मूल मान्यतायें
*** अहिंसक वर्ग संघर्ष की गाँधी जी की अवधारणा एवं इसका औचित्य

युनिट–2

* सत्याग्रह की विधियाँ एवं प्रविधियाँ–कर न देना, असहयोग एवं नागरिक अवज्ञा आदि
** सत्याग्रह एवं निष्क्रिय प्रतिरोध, सत्याग्रह की प्रधानता

युनिट–3

* रचनात्मक कार्यक्रम का दर्शन–क्रांति के उपकरण के रूप में, जनजागृति, आत्मनिर्भरता का विकास, नेतृत्व एवं जनसहभागिता में विश्वास
** रचनात्मक कार्यक्रम के विभिन्न प्रकार–पूर्व एवं वर्तमान में महत्व, चिपको आन्दोलन एवं गोसंरक्षण के संदर्भ में देवनार सत्याग्रह

युनिट–4

* गाँधी जी का अखिल भारतीय सत्याग्रह–असहयोग, नागरिक अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आन्दोलन
** गाँधी जी का स्थानीय सत्याग्रह–चम्पारण, खेड़ा एवं अहमदाबाद सत्याग्रह
*** विभिन्न राष्ट्रों के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के सम्बन्ध में अहिंसक आन्दोलन

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सत्याग्रह – म0 गाँधी–नव जीवन प्रकाशन
2. सत्याग्रह और युद्ध–म0 गाँधी, शुद्ध खादी भण्डार,
3. सत्याग्रह – रं0 रा0 दिवाकर
4. अहिंसा की शक्ति– रिचार्ड ग्रेंड
5. Gandhi M. K., Satyagraha
6. Diwakar, R. R. - Satyagraha, Its Teaching and History
7. Gandhiji : A Study - Hiren Mukherjee.

चतुर्थ प्रश्न–पत्र
(गाँधी जी का सामाजिक चिंतन)

युनिट–1

*	गाँधी जी के सामाजिक चिंतन की विशेषतायें

**	व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध तथा गाँधी के अनुसार समाज में व्यक्ति का स्थान

***	गाँधी जी के अनुसार आदर्श मनुष्य, मनुष्य के जन्मजात शुभत्व का सिद्धान्त, मनुष्य के आक्रामक और संग्रहणीय भावों का उदात्तीकरण

युनिट–2

*	समाज संरचना – वर्ग और जाति, शोषित और विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग तथा गाँधीवादी तरीके से उनकी समस्याओं का समाधान

**	गाँधी जी के चिंतन में सभ्यता एवं संस्कृति की अवधारणा

युनिट–3

*	शोषित वर्ग– महिलायें, अछूत तथा अन्य कमजोर वर्ग – इन वर्गो की समस्याओं के समाधान के बारे में गाँधी जी की दृष्टि

**	सामाजिक बुराइयाँ और उनको दूर करने के लिए महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गये कार्यक्रम–साम्प्रदायिक सद्भाव, अश्पृश्यता निवारण, मद्यनिषेध, दहेज उन्मूलन एवं वेश्यावृत्ति उन्मूलन संबंधी कार्यक्रम

युनिट–4

*	समाज की पुनर्सरचना में धर्म और नीति का स्थान – आत्म संयम (ब्रह्मचर्य) आत्मनिर्भरता और पारस्परिक सहयोग

**	वैयक्तिक स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व – सर्वोदय मूलक समाज में दोनों का समन्वय

***	बदलते सामाजिक संदर्भ में गाँधी जी के सामाजिक चिंतन की प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. महात्मा गाँधी का समाज दर्शन– महादेव प्रसाद (अनु0प्रो0 विष्णुकांत शास्त्री)
2. समाज सुधार एवं समस्यायें–गाँधी
3. शराब बन्दी क्यों ? – भारतन कुमारप्पा
4. गाँधी विचार दोहन– श्री किशोर लाल मश्रुवाला
5. व्यक्ति और समाज–सम्पूर्णानंद
6. Gandhi M. K. Moral Man and Immoral society.
7. Gandhi M. K., The Untouchables.
8. Gandhi M. K., Women and Social Injustice.

पंचम् प्रश्न–पत्र

(परवर्ती गाँधीवादी चिंतन)

युनिट–1

* सर्वोदय आन्दोलन की उत्पत्ति एवं विकास (1948 से 1980), सर्वोदय समाज सर्व सेवा संघ और अन्य सर्वोदय संस्थायें

** गाँधी चिंतन में विनोबा जी का योगदान– भूदान, सम्पत्तिदान, ग्रामदान, जीवनदान, आचार्यकुल, शान्तिसेना, महिला शक्ति, ब्रह्म विद्या एवम् चम्बल का चमत्कार

युनिट–2

* जयप्रकाश जी का सम्पूर्ण क्रान्ति, भारतीय राज व्यवस्था एवं दल रहित प्रजातंत्र, जनशक्ति और युवाशक्ति का संगठन, चंबल के डाकुओं का आत्म समर्पण, गाँधी चिन्तन की दृष्टि से जयप्रकाश नारायण का योगदान

** गाँधी चिन्तन में डॉ0 राममनोहर लोहिया का योगदान– सप्तसूत्री क्रान्ति, सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन एवं घेराव

युनिट–3

* खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमान्त गाँधी) और खुदाई खिदमतगार, इसका लक्ष्य और संगठन

** मार्टिन लूथर किंग जूनियर और उनका असहयोग आन्दोलन

युनिट–4

* सर्वोदय आन्दोलन का भविष्य

** पं0 जवाहर लाल नेहरू के चिंतन पर महात्मा गांधी का प्रभाव

*** आचार्य नरेन्द्र देव के चिंतन पर महात्मा गाँधी का प्रभाव

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गाँधीवाद को विनोबा की देन– दशरथ सिंह
2. भूदान यज्ञ : क्या, क्यों और कैसे? – भण्डारी
3. सर्वोदय आन्दोलन का इतिहास– शंकर राव देव
4. सम्पूर्ण क्रान्ति–जय प्रकाश नारायण
5. मार्क्सवाद, समाजवाद एवं गाँधी– राममनोहर लोहिया
6. खान अब्दुल गफ्फार खां– महादेव देसाई
7. Tendulkar, D.G., Abdul Gaffar Khan.
8. Mehrotra, N.C., Lohia : A Study.
9. Pyre Lal-Pilgrins of Peace.

षष्टम् प्रश्न–पत्र
(गाँधी जी का आर्थिक चिंतन)

युनिट–1

* गाँधी जी का आर्थिक चिंतन और उसका क्रमिक विकास

** आर्थिक व्यवस्था के गाँधीवादी आधार : अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र, अहिंसा एवं साधन की शुद्धता, शरीर श्रम, स्वदेशी, विकेन्द्रीकरण

*** आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में गाँधी जी का दृष्टिकोण : आर्थिक कार्य के पीछे निर्देशन का उद्देश्य, कार्य, सुख का श्रोत

युनिट–2

* गाँधी जी की संकल्पना में आर्दश–अर्थव्यवस्था : सर्वोदय की संकल्पना और इसका विश्लेषण

** गाँधी जी की संकल्पना में ग्रामीण पुनः संरचना एवं ग्राम योजना : खादी की प्रासंगिकता, ग्रामोद्योग, कृषि एवं पशुपालन

*** श्रम अर्थशास्त्र और औद्योगिक संबंध : मजदूरी की समस्या, जीविका और मानक मजदूरी, श्रम व्यवस्था, कार्यकर्ता, सहभागिता, व्यावसायिक संघवाद एवं इसके विषय में गाँधी जी का दृष्टिकोण

युनिट–3

* लोक अर्थशास्त्र : सार्वजनिक उद्यम पर राज्य का नियंत्रण, सार्वजनिक व्यय एवं कर–निर्धारण की भूमिका

** सम्पत्ति के वितरण पर गाँधी जी का दृष्टिकोण : समानता एवं न्यासिता (ट्रस्टीशिप)

युनिट–4

* जनसंख्या–नियंत्रण पर गाँधी जी का दृष्टिकोण : जनसंख्या–नियंत्रण एवं परिवार–नियोजन, निर्धनता एवं बेरोजगारी

** गाँधी जी की दृष्टि में सेवा, प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिक–स्थान

*** आधुनिक युग में गाँधी जी के आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मानव अर्थशास्त्र– भगवान दास केला – नवजीवन प्रकाशन
2. गाँधीवादी योजना– श्री मन्नारायण अग्रवाल– शिवलाल अग्रवाल
3. खादी का अर्थशात्र– राजेन्द्र प्रसाद, सर्कलाईट प्रेस, पटना
4. खद्दर का अर्थशास्त्र– गाँधी जी, महिला श्रम वर्द्या
5. Agrawal, S.N. Relevance of Gandhian Economics.
6. Agrawal, S.N. Gandhian Plan.
7. Mathur, J.S. Economic Thought of M. Gandhi.

सप्तम् प्रश्न–पत्र

(गाँधी जी का शैक्षणिक चिंतन)

युनिट–1

* गाँधी जी के शैक्षणिक चिंतन की पृष्ठभूमि एवम् विकास
** बुनियादी शिक्षा के आधार एवम् उद्देश्य : दार्शनिक, आर्थिक, सामाजिक एवम् व्यावसायिक
*** बुनियादी शिक्षा की संरचना, बुनियादी शिक्षा के गुण एवम् दोष तथा समस्याएं

युनिट–2

* भारतीय शिक्षा दर्शन–योग एवम् नव्य वेदान्त
** गाँधी शिक्षा दर्शन एवम् आध्यात्मवाद, प्रकृतिवाद एवम् प्रयोजनवाद
*** ग्रामीण पुनः संरचना एवं राष्ट्रीय एकता के मूलाधार के रूप में बुनियादी शिक्षा के गाँधीवादी सिद्धान्त

युनिट–3

* स्वामी दयानन्द एवं गाँधी शिक्षा दर्शन में आध्यात्मवाद, साम्य एवम् वैषम्य
** भारतीय परिस्थिति में औद्योगीकरण एवं गाँधी शिक्षा दर्शन का समन्वय
*** शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन

युनिट–4

* बुनियादी शिक्षा की प्रणाली, इसका वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक मूल्य
** शिक्षा द्वारा विज्ञान एवं अध्यात्मकता का समन्वय
*** भाषा समस्या एवं शिक्षा

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. बुनियादी शिक्षा– मो0क0 गाँधी, नवजीवन प्रकाशन
2. नयी तालिम– धीरेन्द्र मजुमदार, सर्व सेवा संघ प्रकाशन
3. शिक्षा में अहिंसक क्रांति– मो0 क0 गाँधी, तालीम संघ वर्द्धा
4. विद्यार्थियों से – मो0 क0 गाँधी, नव जीवन प्रकाशन
5. Patel. M.s. The Educational Philosophy of M.Gandhi
6. Educational Reconstruction (Hindustan Talimi Sangh)
7. Saiyaddin, K.G., Introducting the Basic System.

अष्टम् प्रश्न–पत्र

(गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम एवं समाज–कार्य)

युनिट–1

* रचनात्मक कार्यक्रम का सिद्धान्त एवं व्यवहार, रचनात्मक कार्यक्रम का दर्शन एवं महत्व

** रचनात्मक कार्यक्रम एवं गाँधी की दृष्टि, गाँधी जी द्वारा प्रणीत रचनात्मक कार्यक्रम : कौमी एकता, अस्पुश्यता निवारण एवं शराब बन्दी।

*** खादी एवम् ग्रामोद्योग के सन्दर्भ में गाँधी जी का रचनात्मक कार्यक्रम।

युनिट–2

* गाँवों की सफाई, आरोग्य के नियमों की शिक्षा एवं स्त्रियों के संबंध में गाँधी चिंतन

** बुनियादी तालीम एवं बड़ों के तालीम के संबंध में गाँधी विचार।

*** राष्ट्रभाषा एवं मातृभाषा एवं प्रातीय भाषाओं के सन्दर्भ में गाँधी जी का रचनात्मक कार्यक्रम।

**** किसान, मजदूर एवं आर्थिक समानता के सन्दर्भ में गाँधी जी का दृष्टिकोण।

युनिट–3

* आदिवासी, कुष्ठ रोगी एवं विद्यार्थियों के सन्दर्भ में गाँधी विचार।

** गाँधी प्रणीत रचनात्मक कार्यक्रमों का भविष्य, गाँधीवादी मूल्य एवं रचनात्मक कार्यक्रम।

*** गाँधीवादी समाजकार्य एवं सर्वोदय से समाजकार्य की तुलना।

युनिट–4

* समाजकार्य, परिभाषा, दर्शन, उद्देश्य एवं क्षेत्र।

** समाज सुधार, समाज कल्याण, समाज सेवा से समाजकार्य भिन्नता।

*** रचनात्मक कार्यक्रम और सामाजिक क्रान्ति (सामाजिक परिवर्तन) अहिंसक समाज रचना के परिप्रेक्ष्य में समाजकार्य एवं रचनात्मक कार्यक्रम की भूमिका।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. समाजकार्य– प्रो0 राजाराम शास्त्रीय
2. समाजकार्य प्रक्रिया– प्रो0 गिरीश कुमार
3. समाजकार्य दर्शन इतिहास एवं प्रणालियाँ– डॉ0 कृपाल सिंह सूदन
4. रचनात्मक कार्यक्रम– महात्मा गाँधी
5. समाज सुधार एवं समस्याएं– महात्मा गांधी

नवम् प्रश्न–पत्र

(सामुदायिक संगठन एवम् सामाजिक क्रिया)

युनिट–1

* समुदायका अर्थ, प्रकार, भारतीय समुदायों का स्वरूप, समुदाय की विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण, एम0जी0 रास द्वारा सामुदायिक संगठन की दी गई परिभाषा की आलोचनात्मक व्याख्या।

युनिट–2

* सामुदायिक संगठन के प्रकार, समाजकार्य की प्रक्रिया के रूप में सामुदायिक संगठन, सामुदायिक आवश्यकताएं, प्राथमिकता निर्धारण, सामुदायिक संगठन प्रक्रिया के विभिन्न चरण, सामुदायिक संगठन एवं समाजकार्य की अन्य प्रणालियाँ, सामाजिक वैयक्तिक सेवाकार्य, सामूहिक सेवाकार्य से सम्बन्ध सामुदायिक संगठन के लक्ष्य।

युनिट–3

* सामुदायिक संगठनकर्त्ता की भूमिका :– दिग्दर्शक के रूप में, सामर्थ्यदाता के रूप में, शिक्षक के रूप में, उपचारकर्ता के रूप में, सामुदायिक संगठनकर्त्ता के भूमिका निष्पादन को प्रभावित करने वाले कारक, सामुदायिक नेतृत्व, सामुदायिक परिषद, सामुदायिक कोष।

युनिट–4

* सामाजिक क्रिया–अर्थ एवं परिभाषा समाजकार्य की एक प्रणाली के रूप में सामाजिक क्रिया, सामाजिक क्रांति एवं समाज सुधार, सामाजिक क्रिया की स्थितियाँ एवं समस्याएं, समाज वैज्ञानिक के रूप में व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्त्ता, सामाजिक क्रिया में सामुदायिक सहभागिता एवं जनचेतना उत्पन्न करने की विधियाँ एवं प्रविधियाँ, सामाजिक क्रिया में सामाजिक कार्यकर्त्ता की भूमिका।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सामुदायिक संगठन– डॉ0 ए0एन0 सिंह
2. समाजकार्य– प्रो0 ए0एस0 इनामशास्त्री
3. समाजकार्य– प्रो0 राजाराम शास्त्री
4. Community Organisation - M.G. Ross
5. Community Organisation and Social Action - Prof. H.Y. Siddiqi.
6. Community Organisation in India - Prof. K.D. Gangrade.

दशम् प्रश्न–पत्र

अहिंसा एवं शान्ति दर्शन

(Philosophy of Non-violence and Peace)

इकाई – प्रथम

1. प्राचीन भारतीय परम्परा में अहिंसा : वैदिक परम्परा, जैन एवं बुद्ध परम्परा, गांधी परम्परा, ईसाई एवं आधुनिक परम्परा में अहिंसा।
2. हिंसा और अहिंसा के अर्थ, हिंसा का आधार, हिंसा के प्रकार, अहिंसा के निहतार्थ, अहिंसा के स्तर, सत्य और अहिंसा।

इकाई – द्वितीय

3. शान्ति का अर्थ एवं क्षेत्र, शान्ति का सामाजिक स्वरूप – शान्ति शोध, शान्ति आन्दोलन एवं शान्ति शिक्षा।
4. युद्ध एवं शान्ति : युद्ध के कारण, युद्ध एवं हिंसा के विकल्प के रूप में शान्ति–शोध, भारत में शान्ति शोध की समस्यायें।

इकाई – तृतीय

5. शान्ति एवं शोध शान्ति : शान्ति शोध में शान्ति का अर्थ, शान्ति शोध की प्रणाली, शान्ति शोध की आवश्यकता, शान्ति शोध एवं प्रयुक्त (Applied) विज्ञान और उसका अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध।
6. संघर्ष एवं संघर्ष–समाधान (कलह शमन), संघर्ष की प्रकृति, संघर्ष के स्रोत, संघर्ष के क्षेत्र, संघर्ष की प्रक्रिया, संघर्ष समाधान की प्राविधियां तथा संघर्ष समाधान का गांधी मार्ग।

इकाई – चतुर्थ

7. शान्ति पर्यवेक्षक के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ (UNO) की भूमिका, शान्ति सेना, शान्ति दल, विश्व शान्ति एवं विश्व संस्था के संदर्भ में गांधी जी के विचार।
8. निःशस्त्रीकरण, पारिस्थतिकी (Ecological) संतुलन, पश्चिम एवं भारत के समकालीन समाज में अहिंसक प्रतिकार के आन्दोलन एवं अर्न्तराष्ट्रीय विश्व–शान्ति के संदर्भ में नेहरू के पंचशील सिद्धान्त।

****